ikij & f}rh; % ifjp;kREkd i'kfpfdRlk eMhflu
leLVj iFke
dkl dk uke : ifjp;kREkd i'kfpfdRlk fDyfudy eMhflu

कोर्स नं. ए.एच.डी. 221 क्रेडिट ऑवर 3 (1+2)

l)kfUrd&

1. बीमार पशु की क्लीनिकल जांच
2. स्वस्थ एवं बीमार पशु के विभिन्न शारीरिक लक्षण
3. पशुओं एवं पक्षियों में शारीरिक तापक्रम, पल्स एवं श्वसन का महत्व
4. बीमार एवं नवजात पशुओं की देखभाल
5. पशुओं की निम्न बीमारियों के कारण, लक्षण, इलाज एवं रोकथाम के उपाय

(i) ikpu r= dh chekfj;k– स्टोमेटाइटिस, फेरिंजाइटिस, चोक, सामान्य अपाचन, अम्लीय अपाचन, क्षारीय अपाचन, कब्ज (कांस्टिपेशन), आफरा (टिम्पेनी), रूमन का संघटन (इम्पेक्शन), पेट दर्द (कोलिक), एन्ट्राइटिस, ट्रोमेटिक रेटिकुलाइटिस, आंत में रूकावट (इन्टेसटाइनल आब्स्ट्रक्शन) आदि।

(ii) "olu r= dh chekfj;k– अपर रेस्पीरेटरी ट्रेक्ट का इन्फेक्शन न्यूमोनिया, ड्रेन्चिंग न्यूमोनिया, प्लूरेसी आदि।

(iii) mRlt u r= dh chekfj;k– यूरीनरी ट्रेक्ट इन्फेशन, नेफराइटिस, सिस्टाइटिस आदि।

(iv) rf=dk r= dh chekfj;k– मेनिन्जाइटिस, एनसिफेलाइटिस आदि।

(v) Ropk] vk[k o dku dh chekfj;k– डर्मेटाइटिस, एक्जिमा, स्केबीज, कंजक्टिवाइटिस, ओटाइटिस आदि।

(vi) eLdykLdyVu&r=– मायोसाइटिस आदि।

(vii) ldyVjh flLVe– (रक्त संचार तंत्र) – ट्रोमेटिक पेरिकार्डाइटिस आदि।

(viii) eVkckfyd chekfj;k– मिल्क फीवर, डाउनर–काऊ–सिन्ड्रोम, कीटोसिस, पोस्ट पारच्यूरेन्ट. हिमोग्लोबिनयुरिया, हाइपोमेगनिशिमिक टिटेनी आदि।

(ix) MfQf'k,Ulh chekfj;k– विटामिन व खनिज तत्वों की कमी से होने वाली बीमारियां।

çk;kfxd%&

1. पशुओं एवं पक्षियों में दवाईयां देने के विभिन्न तरीके।
2. पशुओं एवं पक्षियों में बीमारियों के लक्षण, शारीरिक तापक्रम, पल्स एवं श्वसन को रिकार्ड करना।
3. पशुओं में स्टोमक ट्यूब, प्रोबेंग, कैथेटर आदि डालना।
4. विभिन्न उपकरणों आदि की सफाई व उनका स्टेरिलाइजेशन।
5. खुन के नमूने से सीरम व प्लाज्मा को अलग करने विधि ।
6. ब्लड फिल्म को स्टेन करने की विभिन्न तरीके।

lSeLVj f}rh;&

dkslZ dk uke % ifjp;kREkd i'kqfpfdRlk fizosfUVo esfMflu
dkslZ ua- ,-,p-Mh- 222 ØsfMV vkoj 3 ¼1$2½

lS)kfUrd%–

पशुओं व पक्षियों की निम्न बीमारियों के लक्षण, उनका इलाज एवं रोकथाम के उपाय

1- **thok.kq&tfur chekfj;k&** एन्थ्रेक्स, गल–घोटु (एच. एस.), लंगड़ा बुखार (बी. क्यू.), ब्रूसेलोसिस, क्षयरोग (टी. बी.), पेराट्युबरकुलोसिस, एक्टिनोमाइकोसिस, एक्टिनोबेसिलोसिस, लेपटोस्पायरोसिस, सालमोनेलोसिस, कॉलिबेसिलोसिस, कन्टेजियस, केपराइन प्लूरोन्यूमोनिया, टिटेनस, एन्टेरोटोक्सिमिया, बोचूलिज्म, बेसीलरी, हिमोग्लोबिनूरिया, फुट–रोट, मेस्टाइटिस आदि।

2- **fo"kk.kq&tfur chekfj;k&** रिन्डर पेस्ट (आर.पी.), फुट एण्ड माउथ डीजिज (एफ.एम.डी), पॉक्स (काउ–पॉक्स, शीप–पॉक्स, गोट–पॉक्स, फाउल–पॉक्स आदि), रेबीज, बोवाइन मेलिगनेंट–कटार, म्यूकोजल डीजिज कॉम्पलेक्स, एफीमेरल फीवर, माइकोप्लाज्मा, अफ्रीकन होर्स सिक्नेस, रानीखेत डीजिज, मेरेक्स डीजिज, पुलोरम डीजिज, क्रोनिक रेस्पीरेटरी डीजिज (सी.आर.डी.), बर्ड फ्लू, गमबोरो डीजिज आदि।

3- **dod&tfur chekfj;k&** रिंग वर्म, अफलाटॉक्सिकोसिस।

4- **çksVkstksvu&chekfj;k&** थायलेरियोसिस, बबेसियोसिस, सर्रा, लिशमानिएसिस, काक्सीडिओसिस आदि।

5- **fjdsVfl'k;y chekfj;k&** एनाप्लाजमोसिस,

6- **ijthoh&tfur chekfj;k&** पेरासिटिक गेस्ट्रोएन्ट्राइटिस व हिमोकोसिस, एसकेरिड इन्फेस्टेशन, स्ट्रोंगाइलोसिस, लंगवर्म इन्फेस्टेशन, फेसियोलिएसिस, एम्फीस्टोमोसिस, टेपवर्म इन्फेस्टेशन, नेजल बोट्स, लाउस इन्फेस्टेशन, टिक्स इन्फेस्टेशन इत्यादि।

çk;ksfxd %&

1. प्रयोगशाला निदान हेतु विभिन्न पशुओं के रक्त, मल, मूत्र, दूध, स्किन–स्क्रेपिंगस के नमूने लेना व इनकी प्रयोगशाला जांच करना।
2. पशुओं व पक्षियों में रोग प्रतिरोधक टीके लगाने के तरीके।
3. विभिन्न उपकरणों आदि की सफाई व उनका स्टेरेलाइजेशन करना।
4. खुन के नमूने से सीरम व प्लाज्मा को अलग करने विधि ।
5. ब्लड फिल्म को स्टेन करने की विभिन्न तरीके।